बिहार सरकार
कृषि विभाग

पत्रांक 68 (I)/बामेती/2011 – 12/669 दिनांक – 13.10.11

प्रेषक

डा0 एन0 विजय लक्ष्मी,
सचिव कृषि
बिहार, पटना।

सेवा में,

जिला कृषि पदाधिकारी (सभी)
परियोजना निदेशक आत्मा (सभी)

विषयः– किसानों की सफलता की कहानी प्रेषण के संबंध में।

महाशय,

उपर्युक्त विषय के संबंध में कहना है कि विभाग द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि खरीफ 2011 में संचालित तीन विशेष कार्यक्रमों यथा हरी खाद (ढैंचा) का उपयोग, श्री विधि से धान की खेती तथा संकर प्रभेद से धान की खेती पर प्रत्येक जिले से प्रति विषय 15 – 20 किसानों के सफलता की कहानी तैयार की जाए। सफलता की कहानी का प्रेषण वृतचित्र तथा लेख के माध्यम (हार्ड एवं सॉफ्ट कॉपी सहित) से किया जाना है जिसकी मार्गदर्शिका पत्र के साथ संलग्न है। किसानों के सफलता की कहानी का वृतचित्र आत्मा योजना के कैफेटेरिया ऑफ एक्टिविटी बी–10 से किया जाए।

किसानों की सफलता की कहानी दोनों माध्यमों में तैयार कर 15 दिनों के अंदर निदेशक बामेती/ उप कृषि निदेशक (सूचना) को प्रेषित किया जाए।

इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

विश्वासभाजन

अनुलग्नक – यथोक्त।

ह0/–
(डा0 एन0 विजय लक्ष्मी)
सचिव कृषि
बिहार, पटना

ज्ञापांक 68 (I)/बामेती/2011 – 12/669 दिनांक –13.10.11

प्रतिलिपि

- प्रमंडलीय संयुक्त कृषि निदेशक (सभी)/ जिलों के लिए नामित नोडल पदाधिकारी को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

13/10/11

सचिव कृषि
बिहार, पटना

vuqyXud & 1

lQyrk dh dgkuh iz"k.k dh ekxZnf'kZdk

जैसा आप अवगत हैं कि खरीफ 2011 में कृषि विभाग द्वारा तीन विशेष कार्यक्रम क्रियान्वित किए गए हैं (क) हरी खाद (ढैंचा) का उपयोग (ख) श्री विधि से धान की खेती तथा (ग) संकर प्रभेद से धान की खेतीं इन तीन विशेष कार्यक्रमों पर प्रति कार्यक्रम प्रत्येक जिले से 15 & 20 fdlkuksa का सफलता की कहानी प्रेषित किया जाना हैं

इन तीन विषयों पर किसानों की सफलता की कहानी दो माध्यमों से प्रेषित किया जाना है –

1. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम – इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सफलता की कहानी प्रेषित करने के लिए निम्नांकित महत्वपूर्ण विन्दुओं पर 15 से 20 मिनट की वृतचित्र बनाकर मुख्यालय भेजा जाना है –

    - किसानों का अनुभव किसान की जुबानी
        - क. जिसमें हरी खाद (ढैंचा) के उपयोग से धान में किसानों का उर्वरकों पर खर्च कितना कम हुआ तथा किसान ढैंचा लगाकर कितने लाभान्वित हुए और अगले वर्ष के लिए ढैंचा का बीज संग्रहण आदिं
        - ख. पारम्परिक विधि से धान की खेती की तुलना में श्री विधि से खेती करने पर किसानों को क्या लाभ प्राप्त हुआ? श्री विधि से अपनाने से खेत की तैयारी, उर्वरकों पर खर्च, खरपतवारों का प्रकोप, जल प्रबंधन आदिं
        - ग. संकर प्रभेद के उपयोग से उन्नत/घरेलू बीज की तुलना में क्या लाभ प्राप्त हुआ? यदि किसी किसान ने संकर प्रभेद का उपयोग श्री विधि के माध्यम से किया है तो पारम्परिक विधि से संकर प्रभेद की रोपनी तथा श्री विधि से रोपनी करने में क्या अंतर प्राप्त हुआ है?
    - वृतचित्र में ढैंचा के संदर्भ में किसानों द्वारा ढैंचा का बीज छीटने की क्रिया से लेकर फसल के वृद्धि चक्र तथा खेतों में पलटने की क्रिया, श्री विधि के संदर्भ में बीज उपचार से लेकर फसल कटनी तक की क्रिया तथा संकर प्रभेद के उपयोग का

बीज उपचार से लेकर फसल कटनी तक की क्रिया/ संकर प्रभेद श्री विधि के माध्यम से करने की पूरी प्रक्रिया का बाइट आवश्यक हैं

2. लेख के माध्यम से – किसानों द्वारा कृषि विभाग के इन दो विशेष कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन पर संक्षिप्त लेख के लिए मार्गदर्शन निम्नवत है –

- लेख में किसान का फोटो, किसान का चित्र + खेत का चित्र, किसान के खेत में खड़ी फसल का चित्र, कृषि विभाग द्वारा संचालित किसानों के खेत में प्रत्यक्षण में प्रत्यक्षण बोर्ड/फ्लैक्सी के चित्र आदिं
- तीनों विषयों पर लेख ए–4 आकार पेपर Kruti Dev 010 Font में 16 Font Size में एक पृष्ठ प्रति किसान से अधिक नहीं होनी चाहिएं
- लेख में प्रथम पैराग्राफ में किसान के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी (यथा नाम, गाँव का नाम, प्रखंड, रकवा जिसमें ढैंचा/श्री विधि/संकर प्रभेद से खेती की गयी हो)
- द्वितीय पैराग्राफ में किसानों का अनुभव (यथा पारम्परिक विधि की तुलना में श्री विधि/संकर प्रभेद अपनाने से कल्लों की संख्या, रोग व्याधि का प्रकोप, जल प्रबंधन आदिं)
- तृतीय पैराग्राफ में विशेष कार्यक्रमों से कितना आर्थिक बचत हुआ (श्री विधि के संदर्भ में इसकी तुलना पारम्परिक विधि से धान की खेती से किया जाना आवश्यक है/संकर प्रभेद की तुलना पारम्परिक विधि से खेती या संकर प्रभेद श्री विधि से करने से पारम्परिक विधि की तुलना में फायदे/हरी खाद के प्रयोग से धान में उर्वरक की बचत)
- अंतिम पैराग्राफ में किसानों का कृषि विभाग द्वारा संचालित विशेष कार्यक्रमों पर प्रतिक्रिया/सुझावं